sio

POLICY AND PROGRAMME

January 2021 - December 2022

Students Islamic Organisation of India | www.sio-india.org

मिशन

ईश्वरीय मार्गदर्शन (इलाही हिदायात) के अनुसार समाज के नवनिर्माण के लिए छात्रों व युवाओं को तैयार करना।

उद्देश्य

1. छात्रों एवं युवाओं को इस्लाम की दावत देना।
2. छात्रों एवं युवाओं में इस्लामी ज्ञान का प्रचार तथा दीन (इस्लाम) की चेतना जागृत करना है।
3. छात्रों एवं युवाओं को प्रेरित करना कि वे अपना व्यक्तिगत तथा सामूहिक जीवन क़ुरआन व सुन्नत के अनुसार ढालें।
4. छात्रों एवं युवाओं को भलाई (मारुफ़) के विकास तथा बुराइयों (मुनकर) की समाप्ति के लिए प्रेरित करना।
5. शिक्षा व्यवस्था में नैतिक मूल्यों तथा शिक्षण संस्थानों में उच्च नैतिक व शैक्षिक वातावरण को विकसित करना।
6. संगठन से जुड़े लोगों को बहुमुखी प्रशिक्षण देना, उनकी प्रतिभाओं को विकसित करना तथा उन्हें इस्लामी आंदोलन (तहरीक-ए-इस्लामी) के लिए लाभकारी बनाना।

कार्यपाली

A. संगठन का मूल मार्गदर्शक और आधारशिला क़ुरआन और सुन्नत होगी ।
B. संगठन अपने सभी कार्य में नैतिक सीमाओं का पाबन्द होगा ।
C. संगठन अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शांतिपूर्ण और सकारात्मक मार्ग,शिक्षा ,उपदेश और प्रचार -प्रसार के प्रसिद्ध माध्यम अपनाएगा और उन तमाम कार्यों से बचेगा जो सच्चाई और ईमानदारी के विरुद्ध हो अथवा जिनसे साम्प्रदायिक वैमनस्य ,वर्ग संघर्ष और सामाजिक बिगाड़ पैदा हो सकता हो।

प्रस्तावना

- अल्लाह तआला सारी दुनिया का पैदा करने वाला है।
- सारी दुनिया उसके अहकाम की पाबंद है, और उसकी मर्ज़ी व उसके हुक्म के मुताबिक़ हरकत करते हैं।
- अल्लाह ने इस दुनिया में इंसान को अपना ख़लीफ़ा बना कर पैदा किया है और उसे अमल की आज़ादी दी है।
- अमल की आज़ादी के साथ अल्लाह ने इस्लाम की सूरत में अपना पसंदीदा तरीक़ा-ए-ज़िन्दगी स्पष्ट कर दिया।
- इस्लाम नबियों के द्वारा दुनिया वालों पर वाज़ेह किया जाता रहा और आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) के द्वारा क़यामत तक के लिए आख़िरी शरीयत उतारी गई।
- इस तरह अल्लाह ने अमल की आज़ादी दे कर और अपनी पसंद बता कर इंसान के लिए एक 'इम्तेहान' तय कर दिया। जो इंसान अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ इस्लाम के तहत ज़िन्दगी गुज़ारेगा, वह कामयाब है वरना नाकाम है।
- इस्लाम सम्पूर्ण दीन तथा एक ऐसी जीवन व्यवस्था है जो ज़िन्दगी के सभी विभागों में मार्गदर्शन करती है। चाहें राजनीति हो या अर्थव्यवस्था, पारिवारिक जीवन हो या निजी गतिविधियां हर विभाग में इस्लाम का मार्गदर्शन मौजूद है।
- इस्लाम पर अमल का मतलब इसी सम्पूर्ण इस्लाम पर अमल है। चाहें वो व्यक्तिगत अमल हो या सामुदायिक अथवा सामाजिक।
- एक मुसलमान की ज़िम्मेदारी केवल इस्लाम पर अमल ही की नहीं है बल्कि सम्पूर्ण इस्लाम की स्थापना तथा इसे लागू करना भी एक कर्तव्य है।
- अर्थात एक मुसलमान की ज़िम्मेदारी यह है कि वह व्यक्तिगत रूप से इस्लाम पर पूर्णतः अमल करें। इस्लाम की दावत तथा प्रसार की कोशिश करे और जिन-जिन विभागों में इस्लाम सामन्यतः लागू नहीं है वहाँ उसे लागू करने का प्रयास करे।
- इस्लाम की स्थापना व उसे लागू करने की यह कोशिश एक दीर्घ अवधि तथा धैर्य के साथ संघर्ष चाहती है।
- इस जद्दोजहद के लिए छात्रों व नौजवानों को तैयार करना तथा उन्हें इस योग्य बनाना कि वह इसमें अपना महत्वपूर्ण किरदार अदा कर सकें जिसकी उम्मत-ए-मुस्लिमा व इस्लाम को सख़्त ज़रूरत है।
- SIO इसी जद्दोजहद के लिए क़ायम की गई है।

- SIO छात्रों व नौजवानों को इस्लाम की सही समझ प्रदान करती है तथा इस्लाम की उच्च शिक्षाओं से उन्हें अवगत कराती है।
- SIO छात्रों व नौजवानों को इस्लाम पर अमल करने के लिए आमादा करती है तथा वह माहौल देती है जो इस्लाम पर अमल करने में मददगार होता है।
- SIO छात्रों व नौजवानों को इस्लाम के प्रसार व उसकी दावत के काम के लिए तैयार करती है तथा इसके लिये आवश्यक अवसर व संसाधन तथा मार्गदर्शन उपलब्ध कराती है।
- SIO छात्रों व नौजवानों की प्रतिभाओं को विकसित करती है तथा उनकी तरबियत इस तरह करती है कि वह इस्लाम के लिए प्रभावी किरदार अदा करने के योग्य हो जाएं।
- SIO छात्रों व नौजवानों में ऐसी भावनाएँ एवं गुण पैदा करती है जो उन्हें अपनी ज़िम्मेदारी अदा करने के लिए सक्रिय रखें।
- SIO इस काम को विशेष रूप से छात्रों और शैक्षणिक संस्थानों में अंजाम देती है।
- SIO की इन तमाम सरगर्मियों एवं प्रयासों का उद्देश्य अल्लाह की रज़ा और आख़िरत में कामयाबी की प्राप्ति है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष का संदेश

अज़ीज़ भाईयो!

अस्सलाम-अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहू

इंशाल्लाह, इस कार्यकाल के अंत में संगठन अपनी यात्रा के 40 साल पूरे करेगा। इस लंबी यात्रा में संगठन को हमेशा अल्लाह तआला की मदद और नुसरत हासिल रही है। इस बेपनाह रहमत के लिए हम अल्लाह का शुक्र करते हैं। इस महान यात्रा का हिस्सा बनने वाले हर साथी के लिए ख़ैर व बरकत की दुआ करते हुए हम भविष्य में इस कारवाँ को बेहतर तरीक़े से आगे बढ़ाने को दृढ़ संकल्पित होकर मीक़ात की शुरूआत करते हैं।

दोस्तो! सबसे पहले जिस बात पर मैं अपने आप को और आप सभी तवज्जो दिलाना चाहता हूं वह अल्लाह तआला से ताल्लुक़ और ज़िक्र व फ़िक्र है। हम में से हरेक इस बात की कोशिश करे कि हमारी ज़िंदगी का कोई हिस्सा, कोई क्षण अल्लाह की नाफ़रमानी में न गुज़रे। हमारा चलना, फिरना, उठना, बैठना, सोना, जागना, पढ़ना, लिखना, व्यवसाय या जॉब करना, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में संघर्ष करना, ग़रज़ हमारा हर अमल अल्लाह के दीन के अनुसार विशुद्ध रूप से उसकी रज़ा के लिए हो।

दूसरे, अपनी मनसबी ज़िम्मेदारी का एहसास करते हुए अपने भीतर दाईयाना चरित्र पैदा करने और सभी व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों में दावती तक़ाज़ों को मद्देनज़र रखने की कोशिश करें, साथ ही साथ नफ़रत और शोषण के माहौल में न्याय के लिए पुरअम्न और निर्माणकारी संघर्ष और दिलों को मुहब्बत से जीतने पर विशेष तवज्जो हो।

हर चीज की अपनी गतिशीलता होती है और सामाजिक परिवर्तन की भी अपनी गतिशीलता है। सामाजिक परिवर्तन के लिए महज़ पैग़ाम की सदाक़त व सच्चाई का होना काफ़ी नहीं है बल्कि सामाजिक परिवर्तन की डायनामिक्स समझने और उसके तत्क्षण उपयोग पर भी विशेष तवज्जो होनी चाहिए। हमें वर्तमान युग के प्रसंगों को समझने पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। दो साल की नीति और कार्यक्रम तैयार करने के साथ-साथ स्पष्ट और निश्चित लक्ष्यों पर आधारित दीर्घकालिक विज़न और योजना की तैयारी भी हमारे पेशेनज़र हो। इस विज़न की रोशनी में अपने बयानिये रणनीति और संगठनात्मक संरचना से संबन्धित भी ग़ौर व फ़िक्र नीज़ नए प्रयोग करने की आवश्यकता है।

ज़िंदगी के विभिन्न मैदानों में फ़िक्र-ए-इस्लामी के गठन, तफ़हीम, प्रचार-प्रसार विशेष रूप से फ़लसफ़ा इल्म व तालीम पर ठोस और स्थायी इल्मी व अमली तैयारी व संघर्ष के बिना

समाज के नवनिर्माण सपना कभी पूरा नहीं हो सकता। इस संबंध में ख़ुद काम करने के अलावा समाज में मौजूद प्रतिभाशाली व्यक्तियों और संस्थानों के साथ सहयोग भी बहुत महत्वपूर्ण है। एक सफल जीवन गुज़ारने और इस्लामी आंदोलन के तक़ाज़ों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न मोर्चों विशेष रूप से शैक्षिक, आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्रों में क्षमता निर्माण पर विशेष ध्यान दें। तेजी से बढ़ते पर्यावरणीय संकट ने एक खतरनाक मोड़ ले लिया है। इसी तरह तेज़ी से डिजिटलाइज़ेशन और प्रौद्योगिकी पर निर्भर होती इस दुनिया में नित नई मनोवैज्ञानिक, नैतिक और राजनीतिक समस्याएं उभर रही हैं। ये ऐसे महाज़ हैं जो अत्यधिक संवेदनशील और महत्वपूर्ण होने के बावजूद अभी तक हमारे कार्यों और प्राथमिकताओं में अपना सही स्थान नहीं पा सके हैं। इस संबंध में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। अपनी विचारधारा के प्रचार और प्रसार साथ ही साथ सांस्कृतिक विकास के लिए सही रास्ते पर साहित्य और संस्कृति का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक छात्र आंदोलन के रूप में हमें इस मोर्चे पर भी विशेष ध्यान देना होगा।

जिन बिंदुओं पर इस पैग़ाम में तवज्जो दिलाई गई है उनके अलावा भी विभिन्न समस्याओं और विषयों पर CAC ने नीतियों और कार्यक्रमों के रूप में बहुत महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं। हलक़ों के विशेष हालात और आवश्यकताओं के पेशेनज़र सलाहकार समितियों को प्रोग्राम बनाने के साथ-साथ पॉलिसीज़ बनाने की भी अनुमति है, बस यह सुनिश्चित करें कि नई पॉलिसीज़ मरकज़ की पॉलिसीज़ और उनकी रूह के साथ टकराव न हो और उनका क्रियान्वयन राष्ट्रीय अध्यक्ष के अनुमोदन के बाद ही होगा।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से दुआ है कि वह हमें बेहतर अंदाज़ में काम करने की तौफ़ीक़ अता फरमाए और हमारी कोशिशों को क़ुबूल करे, आमीन।

यक़ी मुहकम, अमल पैहम, मुहब्बत फ़ातहे-आलम
जिहाद-ए-ज़िंदगानी में हैं ये मर्दों की शमशीरें

मुहम्मद सलमान अहमद
राष्ट्रीय अध्यक्ष, एसआईओ ऑफ इंडिया
23 जमादिल-अव्वल 1442 हि०/8 जनवरी 2020

पॉलिसी ड्राफ़्ट

(जनवरी 2021 – दिसंबर 2022 कार्यकाल के लिए)

संगठन के वाबस्तगान अल्लाह तआला से अपने ताल्लुक़ को अपनी प्राथमिक और बुनियादी ज़रूरत समझते हुए अपने ईमान में दृढ़ता, दिल में पवित्रता, अमल में स्थिरता तथा व्यक्तित्व में लाभकारी गुण पैदा करने के लिए लगातार प्रयास करते रहेंगे। संगठन तज़्किया के सिलसिले में अनुकूल माहौल प्रदान करेगा।

अल्लाह से कलाम और रसूल (सल्ल.) से दिली मुहब्बत की फ़र्द की तरबियत और तज़्किया में महत्वपूर्ण भूमिका है। अल्लाह तआला की रज़ा की उम्मीद और आख़िरत की पकड़ का खौफ़ ही इंसान को अमल की ओर उभारते हैं। इस सिलसिले में वाबस्तगान के दरमियान क़ुरआन से मुहब्बत और मस्जिदों से गहरे ताल्लुक़ का मिज़ाज भी परवान चढ़ाया जाए।

ईमान, यक़ीन की वह कैफ़ियत है, जो फ़र्द को दिली संतुष्टि प्रदान करती है। ईमान की कई शाख़ें हैं जो विभिन्न गुणों की शक्ल में मोमिन की शख़्सियत में प्रदर्शित होती हैं, जैसे तवक्कुल, सब्र, एहसान आदि। इनको और ज़्यादा परवान चढ़ाने और जज़्बात में संतुलन पैदा करने की कोशिश होनी चाहिए। क़ल्ब-व-फ़िक्र की कैफ़ियत अनवरत सरगर्म-ए-अमल रहने से जुड़ी हुई है। इस संबंध में आत्मनिरीक्षण अत्यधिक महत्वपूर्ण है। और संगठन की सभी सरगरमियाँ तज़्किया का ज़रिया हैं।

तज़्किया के संबंध में गतिशील विकास और योग्यता विकसित करने पर तवज्जो हो, ताकि संगठन के अफ़राद तहरीक-ए-इस्लामी की अनमोल धरोहर बनें।

संगठन के वाबस्तगान नफ़्स के तज़्किया के साथ-साथ शारीरिक स्वास्थ्य व तंदुरुस्ती के सिलसिले में भी फ़िक्रमंद रहें।

इज्तिमाईयत की यह ज़िम्मेदारी है कि वह व्यक्ति को तज़्किया के लिए उचित तथा प्रेरणास्रोत वातावरण उपलब्ध कराए।

एसआईओ इस्लामी फ़िक्र की संरचना और विकास के द्वारा जीवन के विभिन्न विभागों में इस्लामी नमूने (Paradigm) व वर्णन की तैयारी, प्रचार व प्रसार पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

हर फ़िक्र व विचारधारा की पृष्ठभूमि में जीवन तथा ब्रह्मांड की अवधारणा होती है। इस्लाम की अपनी जीवन तथा ब्रह्मांड की अवधारणा है जिसके आलोक में मौजूदा दौर के प्रभावी वैचारिक व शैक्षिक रुझानों का आलोचनात्मक जायज़ा लिया जाएगा। साथ ही फ़िक्र-ए-इस्लामी के हवाले से होने वाली अकेडमिक व आनुसंधानिक प्रयासों का परिचय और इस फ़िकरी सफ़र को और बढ़ाने के लिए वाबस्तगान में जोश व उत्साह का संचार करने तथा वांछित योग्यताएँ पैदा करने की कोशिशें की जाएंगी। इस काम के लिए एक तरफ़ फ़िक्र-ए-इस्लामी के स्रोत अर्थात क़ुरआन व सुन्नत से गहरी जागरूकता पैदा करने की कोशिश की जाएगी और साथ ही मौजूदा समाज, उसकी भाषा और डिस्कोर्स का गहरा अध्ययन किया जाएगा ताकि प्रचलित विचारधाराओं व डिस्कोर्स का जायज़ा भी

लिया जा सके और उच्च अकेडमिक स्तर पर उनका विकल्प मुहैया हो।

संगठन के वाबस्तगान व्यक्तिगत अध्ययन और ग़ौर-व-फ़िक्र के द्वारा अपने इल्मी व फ़िकरी विकास और तज़्किया के लिए लगातार प्रयत्नशील रहेंगे। इस संबंध में संगठन छात्रों व वाबस्तगान के लिए इज्तिमाई माहौल प्रदान करेगी।

अध्ययन (Study) व्यक्ति के मानसिक व बौद्धिक विकास का प्राथमिक स्रोत है। यह इल्म का दरवाज़ा है। दुनिया के मार्गदर्शन एवं नेतृत्व के लिए आंशिक जानकारी नहीं बल्कि गहन अध्ययन की आवश्यकता है। एसआईओ इस बात का प्रयास करेगी कि छात्र, विशेष रूप से वाबस्तगान में अध्ययन (Study) का रुझान विकसित हो, उनके इल्म में गहराई और वैचारिक दृढ़ता पैदा हो तथा विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ तैयार हों।

अध्ययन (Study) चाहें किताब का हो या ब्रह्मांड का हो, ग़ौर-ओ-फ़िक्र, गहन अध्ययन तथा आलोचनात्मक विश्लेषण इसके आधार हैं।

क़ुरआन से जुड़ाव तिलावत से शुरू होकर हिफ़्ज़, तदब्बुर, अमल और दावत-ए-क़ुरआन तक जारी रहती है, वहीं हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की सीरत के बार-बार अध्ययन तथा याददिहानी से मोमिनीन इल्मी व अमली जद्दोजहद के लिए जज़्बा हासिल करते हैं।

भाषा व साहित्य से बेहतर जुड़ाव अध्ययन का शौक़, शैक्षिक रुचि, बौद्धिकता और अभिव्यक्ति की योग्यता पैदा करे। ज़मीन व आसमान की निशानियों पर ग़ौर व फ़िक्र के परिणामस्वरूप दिली संतुष्टि और गहरी अंतर्दृष्टि पैदा होती है।

एसआईओ छात्रों व युवाओं में 'दाईयाना किरदार' को विकसित करने के लिए लगातार प्रयास करती रहेगी।

उम्मत-ए-मुस्लिमा की वास्तविक पहचान, अल्लाह तआला के रास्ते की तरफ़ बुलाने वाले गिरोह की है। इस मनसबी कर्तव्य की अदायगी के लिए आवश्यक है कि उम्मत के अफ़राद अपनी कथनी-करनी से इस्लाम की सच्ची तस्वीर पेश करें। अतएव छात्रों व युवाओं में 'दाईयाना किरदार' को इस तरह बढ़ावा दिया जाए कि मिल्लत की सभी व्यक्तिगत व सामुदायिक गतिविधियों में दावती पहलू नुमायाँ हो। जिनको दावत दी जाए उनके लिए ख़ैरख्वाही का जज़्बा पैदा हो तथा मिल्लत के लोग दावत-ए-दीन को अपनी ज़िम्मेदारी समझते हुए पूरे विश्वास, विनम्रता, बुद्धिमत्ता तथा शैक्षणिक तैयारी के साथ हर मोर्चे पर इस्लाम का प्रतिनिधित्व करें।

एसआईओ देश में मौजूद विभिन्न धार्मिक व सामाजिक गिरोहों को इस्लाम और मुसलमानों से क़रीब करने की कोशिश करेगी और उनके विशेष धार्मिक व सामाजिक परिदृश्य को मद्देनज़र रखते हुए इस्लामी अक़ायद की वास्तविकता व आवश्यकता को स्पष्ट करेगी।

क़ुरआन मजीद में दावत-ए-दीन को उम्मत-ए-मुस्लिमा का फर्ज़-ए-मंसबी कहा गया है। नबियों की ज़िंदगियों को पढ़ने से मालूम होता है कि उनकी जद्दोजहद दावत-ए-दीन पर केन्द्रित थी। दीन की दावत पेश करते वक़्त देश के विशेष धार्मिक व सामाजिक परिदृश्य को मद्देनज़र रखते हुए इस्लामी

विचारधारा की वास्तविकता स्पष्ट करना दीन का बुनियादी तक़ाज़ा है। इस बात पर भी विशेष तवज्जो हो कि व्यक्तिगत दावती रिश्तों व इज्तिमाई कोशिशों के नतीजे में देशबंधुओं को अपनी बुनियादी ज़रूरत, दुनियावी फ़लाह और आख़िरत की निजात का ज़रिया समझने लगें।

मौजूदा दौर में नफरत पर आधारित प्रोपगैंडे और घृणा के द्वारा समाज में मौजूद विभिन्न समूहों के बीच खाई पैदा करने की लगातार योजनाबद्ध प्रयास किए जा रहे हैं। दावत-ए-दीन के कर्तव्य की अदायगी के लिए आवश्यक है समाज के विभिन्न अफ़राद व समूहों के बीच पाई जाने वाली बेचैनी और दूरियों का अंत हो और पारस्परिक विश्वास, सहयोग व निकटता का वातावरण बने।

सीएसी का यह भी एहसास है कि दावत-ए-दीन के अमली संघर्ष के साथ-साथ हिंदुस्तान की समझ के हवाले से ऐसे शैक्षिक व आनुसंधानिक कार्य की आवश्यकता है जो अफ़राद के लिए दावती प्रयासों में सहायक सिद्ध हो।

एसआईओ छात्रों व नौजवानों की शैक्षिक, आर्थिक व राजनीतिक प्रतिभाओं को बढ़ाने पर विशेष ध्यान देगी।

किसी भी सामाजिक आंदोलन की सफलता के लिए शर्त यह है कि उसके पास आवश्यक कौशल और क्षमताओं वाले लोगों की महत्वपूर्ण संख्या होनी चाहिए। इन योग्यताओं में शैक्षिक उन्नति, आर्थिक स्थिरता और राजनीतिक अंतर्दृष्टि शामिल हैं। इस संदर्भ में, एसआईओ आवश्यक प्रशिक्षण और संसाधन प्रदान करके अपने कैडरों और छात्रों और युवाओं की क्षमता का निर्माण करे। इस कोशिश के परिणामस्वरूप हासिल होने वाली सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक योग्यताएँ एवं प्रतिभाएँ आंदोलन और समाज के लिए एक अमूल्य धरोहर साबित होंगी।

समाज की शैक्षिक उन्नति की निर्भरता विभिन्न विज्ञानों व विचारधाराओं से निरंतर जुड़ाव पर है। इस संबंध में, छात्रों को अपनी शैक्षिक यात्रा के दौरान विभिन्न चरणों में तकनीकी कौशल और मार्गदर्शन (Career Guidance) मिलता रहना चाहिए।

छात्रों और युवाओं में आर्थिक आत्मनिर्भरता पैदा करने के लिए, उनमें उद्यमिता (Entrepreneurship) की भावना और क्षमता को विकसित करना आवश्यक है। इस सिलसिले में इंक्यूबेशन सेंटर्स (Incubation centers), चैंबर्स ऑफ कॉमर्स (Chambers of commerce) तथा स्वयं सहायता समूहों (Self-help groups) से भी मदद ली जा सकती है।

आमतौर पर चुनाव व राजनीतिक दलों की गतिविधियों को ही राजनीति समझा जाता है। राजनीति जैसे जीवन के जटिल क्षेत्र में यह एक बहुत ही सीमित समझ है। इस संबंध में, समाज में शक्ति के केन्द्रों, उनके बीच की बातचीत और पूरे तंत्र को समझने के साथ-साथ अपने मत की वकालत करना, विभिन्न व्यक्तियों और समूहों के साथ सहयोग करना और अपने पक्ष में राय बनाना जैसी क्षमताओं को विकसित करने के पूरे प्रयास होने चाहिए।

क्षमता निर्माण और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिभाओं का विकास हमारे प्रभाव क्षेत्र का विस्तार करने के लिए अतिआवश्यक है।

एसआईओ चयनित छात्रों व संस्थानों के सहयोग से ज्ञान और शिक्षा के प्रमुख दर्शन का आलोचनात्मक जायजा लेगी। साथ ही, ज्ञान और शिक्षा के इस्लामी दर्शन के गठन, प्रचार और प्रसार के लिए कोशिशें करेगी।

ज्ञान और शिक्षा के बारे में इस्लाम का अपना नज़रिया है जो इस्लाम के जीवन और ब्रह्मांड की व्यापक अवधारणा का फल है। एक वैचारिक संगठन के रूप में हमारा यह कर्तव्य है कि हम मौजूदा शैक्षिक नज़रियों का गंभीर रूप से अध्ययन करें और इस्लामी फ़लसफ़ा तालीम की रोशनी में ज्ञान का पुनर्निर्माण करें। इसके लिए यह आवश्यक है कि हम इस विषय पर कुछ ठोस शैक्षिक व आनुसंधानिक क़दम उठाएं। इस उद्देश्य के लिए संगठन अफ़राद की तैयारी और माहौल प्रदान करने विशेष ध्यान देगा। संगठन अपने वाबस्तगान को प्रोत्साहित करेगा कि वह इस काम को अपनी शैक्षणिक सरगर्मियों का हिस्सा बनाएं साथ ही संगठन चयनित अफ़राद का सहयोग करेगा कि वे देश के प्रमुख शिक्षण संस्थानों में ज्ञान और शिक्षा की इस्लामी विचारधारा को चर्चा का विषय बना सकें।

एसआईओ शिक्षा के क्षेत्र में न्याय को सर्वसुलभ बनाने तथा उच्च गुणवत्ता के हवाले से संघर्ष करते हुए सरकारी नीतियों पर असरअन्दाज़ होगी।

देश में आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्रों के साथ शिक्षा क्षेत्र में भी हमेशा से सामाजिक न्याय की जद्दोजहद की आवश्यकता रही है। शिक्षा क्षेत्र में देश के पिछड़े वर्गों के साथ शोषण व अन्याय, उच्च शिक्षा से दूर रखने की कोशिश, मातृभाषा में शिक्षा के अवसरों को समाप्त करना, समान एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के अवसरों से दूर रखने के प्रत्यक्ष प्रयास आज भी जारी हैं। एक बेहतर समाज के निर्माण के लिए इन समस्याओं के हल के प्रयास हमारी जद्दोजहद का हिस्सा होना चाहिए। इसी प्रकार नैतिकता एवं आधारभूत मूल्य पर इस शिक्षा व्यवस्था के लिए ध्यान योग्य नहीं समझे जाते। यही कारण है कि अश्लीलता, नग्नता तथा बेहयाई न केवल छात्रों तथा शैक्षणिक संस्थानों में बल्कि आधिकारिक रूप से शैक्षिक पाठ्यक्रम में भी शामिल किए जा रहे हैं। शैक्षिक पाठ्यक्रम के द्वारा घृणा फैलाने के संगठित प्रयास भी जारी हैं जिनको संज्ञान में लाया जाना आवश्यक है। इन सभी पहलुओं को सामने रखते हुए एसआईओ देश की शिक्षा नीतियों और एजेंडा पर असरअंदाज़ होने की कोशिश करेगी।

एसआईओ कैम्पस में बेहतर नैतिक व शैक्षिक वातावरण के प्रोत्साहन के साथ ही लोकतान्त्रिक माहौल के लिए प्रयासरत रहेगी।

छात्रों का नैतिक विकास हमेशा एसआईओ की प्राथमिकता रही है। नैतिकता को दरपेश वर्तमान चुनौतियों की रोशनी में एसआईओ कैम्पसों में इस्लामी चरित्र और साझा नैतिक मूल्यों को बहाल करने का प्रयास करेगी। इस संबंध में पेशेवर और तकनीकी संस्थानों और छात्रों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को मद्देनज़र रखते हुए एक बेहतर रणनीति प्रस्तुत करने की आवश्यकता है।

कैंपस में उच्च शैक्षणिक और लोकतांत्रिक माहौल बनाना छात्रों में मौजूद क्षमताओं के निखार के लिए आवश्यक है। एसआईओ कैम्पसों में समानता, निष्पक्षता और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के साथ-साथ कैंपस में लोकतंत्र की बहाली का प्रयास करेगी। इस संबंध में एसआईओ मुद्दों

को हल करने के लिए लोकतांत्रिक तरीकों का भरपूर उपयोग करेगी। सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों के अलावा एसआईओ वर्तमान मुद्दों पर वैचारिक रूप से भी ध्यान केंद्रित करते हुए अपना बयानिया तैयार करेगी।

एसआईओ मदरसों के छात्रों और स्नातकों पर विशेष ध्यान देगी और उनका उपयोग करेगी। साथ ही उन्हें समाज और सामाजिक मुद्दों से जोड़कर उनकी योग्यताओं को विकसित करने का भी प्रयास करेगी।

दीनी मदारिस मिल्लत-ए-इस्लामिया हिन्द के इतिहास का एक उज्ज्वल अध्याय हैं। मदरसों के छात्र मिल्लत की अनमोल धरोहर हैं। संगठन की प्राथमिकता होगी कि मदरसा छात्रों की प्रातिभाओं को बढ़ावा दिया जाए, उन्हें समाज व सामाजिक मुद्दों से जोड़ा जाए ताकि वे देश व मिल्लत के निर्माण में अपना वांछनीय किरदार अदा कर सकें।

एसआईओ समाज में न्याय की स्थापना के लिए छात्रों और नौजवानों में जागरूकता पैदा करेगी। और इस संबंध में, देश के अल्पसंख्यक, पिछड़े वर्ग और अन्य इंसाफ़ पसन्द लोगों को साथ लेकर संघर्ष करेगी।

विगत कई वर्षों से देश में मानवाधिकारों का उल्लंघन करके ख़ौफ़ और मायूसी का माहौल बनाने में शैक्षिक और सामाजिक स्तरों पर मुसलमानों और अन्य शोषित व पिछड़े वर्गों को निम्न स्तर पर धकेलने के निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं। दअरसल ये सारी घटनाएं, विशेष रूप से अल्पसंख्यकों पर होने वाली हिंसा महज़ कोई हादसा नहीं बल्कि योजनाबद्ध तथा संगठित प्रयासों का परिणाम है। इन परिस्थितियों के शिकार सामान्यतः छात्र एवं नौजवान हो रहे हैं अतः यह आवश्यक है कि उनके बीच जागरूकता फैलाई जाए तथा उन्हें इसके ख़िलाफ़ संघर्ष के लिए आमादा किया जाए ताकि देश में न्याय एवं शांति का वातावरण विकसित हो सके। देश और राज्य के अलावा स्थानीय स्तर पर भी समाज के इन्साफ-पसन्द तबक़ों के साथ मिलकर संघर्ष और समस्याओं के समाधान की कोशिश की जाएगी।

एसआईओ छात्रों व नौजवानों के अन्दर टेक्नोलॉजी के प्रभाव और गोपनीयता से जुड़े मुद्दों को चर्चा का विषय बनायेगी।

टेक्नोलॉजी मानव जीवन की एक अनिवार्य ज़रूरत है। जहाँ एक ओर टेक्नोलॉजी के कई सकारात्मक (positive) पहलू है वहीं यह अपने आप में कोई तटस्थ (Neutral) चीज़ नहीं है। टेक्नोलॉजी के मानव जाति और समाज पर बहुत ज़्यादा प्रभाव होते हैं। इन प्रभावों में से एक अहम मुद्दा निजता से संबंधित है। लोगों के व्यक्तिगत और सामूहिक मामलों में अनावश्यक निगरानी (surveillance) और उनके मामलों में राज्य और बाजार का हस्तक्षेप भी एक प्रमुख मुद्दा (issue) बन गया है।

तेज़ी से डिजिटलीकरण और टेक्नोलॉजी पर निर्भर होती इस दुनिया में कई नैतिक व मनोवैज्ञानिक समस्याएं पैदा हो रही हैं। जैसे: अडिकशन, एकाग्रता में कमी, सामाजिक दृष्टिकोण में नकारात्मक परिवर्तन आदि। ऐसे में एसआईओ टेक्नोलॉजी और निजता से जुड़े सवालात पर इल्मी व आनुसांधानिक कार्य करते हुए उन्हें बहस का विषय बनाने की कोशिश करेगी।

एसआईओ इस्लामिक सिद्धांतों के अनुसार पर्यावरण संरक्षण के लिए छात्र व नौजवानों में संवेदनशीलता पैदा करेगी।

प्राकृतिक वातावरण तथा संसाधनों के ग़लत उपयोग के परिणामस्वरूप पैदा होने वाले पर्यावरण संकट विश्व भर में एक संगीन मुद्दा बन गया है। यह समस्या महज़ पर्यावरण संकट नहीं है बल्कि एक जटिल समस्या है जिसमें वैचारिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा स्वास्थ्य से सम्बंधित पहलू शामिल हैं। इस्लाम की "इमारतुल-अर्ज़" अवधारणा की रहनुमाई में एसआईओ छात्रों व नौजवानों में छात्र एवं नौजवानों में संवेदनशीलता पैदा करेगी और प्रचलित विकास मॉडलों का इस्लामी सिद्धांतों पर आधारित विवरण तैयार करेगी। एसआईओ अपने कैडर में 'नागरिक भावना (Civic Sense)' को भी बढ़ावा देगी। आवश्यकता पड़ने पर अन्य संगठनों व व्यक्तियों में साझा संघर्ष भी करेगी।

साहित्य व संस्कृति और मनोरंजन के साधनों का उपयोग करते हुए संगठन छात्रों व नौजवानों में रचनात्मक क्षमता को बढ़ावा देने और अपने प्रभाव क्षेत्र को बढ़ाने की कोशिश करेगा।

समाज में साहित्य और सांस्कृति का अहमियत निर्विवाद है। साहित्य समाज के सभी वर्गों के ज़हनों को प्रभावित करता है। यह जहाँ किसी विचारधारा के प्रसार का एक माध्यम है वहीं सास्कृतिक पूँजी भी है। एक इस्लामिक छात्र संगठन की हैसियत से ज़िम्मेदारी है कि इस पूँजी में दर आने वाले जाहिलाना फलसफ़ों के स्वास्थ्यवर्धक आलोचना के साथ इस्लामी आधार पर इसे विकसित करने के शऊरी प्रयास करें। इस संबंध में संगठन अफ़राद का प्रोत्साहन और रचनात्मक प्रतिभाओं को परवान चढ़ाने का प्रयास करेगा।

जूनियर एसोसिएट की मानसिकता का लिहाज़ रखते हुए उनकी तरबियत इस तरह की जाएगी कि उनमें इस्लाम की मुहब्बत पैदा हो, अख़लाक़ में बेहतरी आए, प्रतिभाओं का विकास हो तथा संगठन से जुड़ने का जज़्बा पैदा हो। इस परिप्रेक्ष्य में विषयवस्तु की तैयारी पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

14 वर्ष से कम आयु के बच्चों की तरबियत व उनकी प्रतिभाओं का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस सिलसिले में सभी प्रांत एवं यूनिटें इस बात पर तवज्जो देंगें कि मुहल्ले व स्कूलों में अंजाम दिए जाने वाले प्रोग्राम जूनियर एसोसिएट की आयु, मिज़ाज, मानसिकता तथा प्राकृतिक आवश्यकताओं के अनुसार हों। इन सरगर्मियों के द्वारा उनके अंदर दीन-ए-इस्लाम से अथाह प्रेम का जज़्बा परवान चढ़े, अख़लाक़ व किरदार बेहतर से बेहतर हों, सृजनात्मकता विकसित हो, प्रतिभाएं परवान चढ़ें तथा शिक्षा का स्तर बुलंद हो। आधुनिक युग में ज़ेहनसाज़ी के लिए सांस्कृतिक आयोजन बहुत प्रभावी किरदार अदा कर रहे हैं। इस परिप्रेक्ष्य में विश्व भर में मौजूद विषयवस्तु को उपलब्ध कराना, नई विषयवस्तु की तैयारी तथा उसका वितरण भी संगठन के मद्देनज़र होगी। जूनियर एसोसिएट्स के एसआईओ में शामिल होने के सिलसिले में भी शऊरी व विशेष तवज्जो की आवश्यकता है।

एसआईओ अपनी सरगर्मियों में विस्तार एवं मज़बूती पर समान रूप से ध्यान देगी ताकि छात्र बिरादरी में इसका संदेश आम हो, इसका प्रभाव दूर तक फैले तथा वाबस्तगान में सांगठनिक समझ, वैचारिक सामंजस्य तथा सम्पूर्ण एकाग्रता पैदा हो। इस परिप्रेक्ष्य में चयनित क्षेत्रों पर विशेष तवज्जो दी जाएगी।

एसआईओ का संदेश देश की छात्र बिरादरी में तेज़ी से आम हो और हमारी कोशिशें व्यवस्थित अंदाज़

में हों, इसके लिए संगठन विस्तार एवं मज़बूती पर समान रूप से तवज्जो देगा। यह भी आवश्यक है कि संगठन से जुड़े लोग देश के किसी भी भाग या क्षेत्र में हों, उनके बीच सांगठनिक समझ, वैचारिक सामंजस्य तथा एकाग्रता जागृत हो। जिन इलाक़ों में संगठन कमज़ोर हैं वहाँ इस परिप्रेक्ष्य में विशेष ध्यान दिया जाएगा। साथ ही संगठन के कार्यकर्ताओं को इस बात पर आमादा किया जाएगा कि वे संगठन की प्राथमिकताओं को मद्देनज़र रखें। प्रतिभावान तथा महत्वपूर्ण संस्थानों के छात्रों पर फ़ोकस करें और उन्हें अपने संगठन का हिस्सा बनाने की कोशिश करें।

प्रोग्राम व गाइडलाइंस

तज़्किया व तरबियत:

- हर सदस्य क़ुरअन मजीद से मज़बूत ताल्लुक़ क़ायम रखने पर विशेष तवज्जो देगा।
- इनफ़ाक़ सप्ताह मनाया जाएगा।
- मरकज़ी स्तर पर "اعتصام بالقرآن" मुहिम का आयोजन किया जाएगा।
- प्रांत क़ुरआनी अरबी भाषा सिखाने का एहतिमाम करेंगे और मरकज़ संसाधन उपलब्ध कराने में मदद करेगा। और साथ ही मरकज़ की सतह पर अरबी तख़स्सुस के कोर्स का आयोजन किया जाएगा।
- मरकज़ स्टडी सीएसी का आयोजन करेगा और प्रांत स्टडी ZAC के आयोजन की कोशिश करेंगे।
- हर सदस्य को व्यक्तिगत तज़्किया ख़ाका तैयार करने पर आमादा किया जाएगा। व्यक्तिगत एहतिसाब इसी ख़ाके की बुनियाद पर लिया जाएगा।
- एसआईओ मनोविज्ञान के इस्लामी दृष्टिकोण पर वर्कशॉप आयोजित करेगी।

फ़िक्र-ए-इस्लामी:

- मरकज़ फ़िक्र-ए-इस्लामी से संबन्धित चरणवार वर्कशॉप्स आयोजित करेगा।

दावत:

- केंद्रीय स्तर पर दावती मुहिम मनाई जाएगी।
- दावती विषयों पर सेमिनार्स आयोजित किए जाएंगे।
- मरकज़ी स्तर पर नौजवान देशबंधुओं के लिए कैंप का आयोजन किया जाएगा।
- मरकज़ी स्तर पर दावती मवाद तैयार किया जाएगा।

क्षमता निर्माण (Capacity Building):

- Inqhab को संगठित किया जाएगा।
- यूनिवर्सिटियों में दाख़िले के रुझान को बढ़ाने के लिए वर्कशॉप का आयोजन किया जाएगा।
- विशेष विभागों में क्षमता निर्माण से संबन्धित सिलसिलेवार वर्कशॉप आयोजित की जाएंगी।

इस्लामी फ़लसफ़ा-ए-तालीम:

- रिसर्च स्कॉलर्स और चयनित छात्रों के लिए Episteme वर्कशॉप का आयोजन किया जाएगा।
- इस्लामी फलसफ़ा-ए-तालीम से संबन्धित आनुसंधानिक व शैक्षिक सेवाएँ अंजाम देने वाले अफ़राद के लिए स्कॉलरशिप प्रदान की जाएगी।

शिक्षा:

- RTE पर रिसर्च के काम को आगे बढ़ाया जाएगा।
- इस्लामोफ़ोबिया पर रिसर्च कार्य को आगे बढ़ाया जाएगा।
- हिस्ट्री समिट सीरीज़ का आयोजन किया जाएगा।

कैंपस:

- SIO स्टूडेंट्स यूनियन के चुनाव में भाग लेगी।
- एसआईओ कैंपसा में सामाजिक कल्याण और अकेडमिक सरगरमियों का आयोजन करेगी।
- नेशनल कैंपस लीडर्स वर्कशॉप का आयोजन किया जाएगा।

दीनी मदारिस:

- दीनी मदारिस के छात्रों व स्नातकों के लिए कैम्प का आयोजन किया जाएगा।
- एसआईओ दीनी मदारिस के छात्रों के लिए सेमिनार और प्रतियोगिताओं का आयोजन करेगी।

लीगल:

- छात्रों व अधिवक्ताओं के लिए केंद्रीय स्तर पर 'ओरिएंटेशन एंड स्किल डेवलपमेंट' वर्कशॉप का आयोजन किया जाएगा।

टेक्नोलॉजी:

- टेक्नॉलॉजी और प्राइवेसी से संबन्धित सेमिनार का आयोजन किया जाएगा।
- E-Ethics सप्ताह का आयोजन किया जाएगा।
- टेक्नॉलॉजी और प्राइवेसी के इस्लामी दृष्टिकोण से संबन्धित मवाद तैयार किया जाएगा।

पर्यावरण:

- पर्यावरण के इस्लामी नज़रिये पर वर्कशॉप का आयोजन किया जाएगा।
- मरकज़ पर्यावरण के इस्लामी नज़रिये पर मवाद तैयार करेगा।

आर्ट एंड कल्चर:

- साहित्य और फ़िल्म मेकिंग पर वर्कशॉप आयोजित किया जाएगा।

जूनियर एसोसिएट सर्किल:

- मरकज़ जूनियर एसोसिएट्स के लिए मवाद फ़राहम करेगा।

संगठन:

- चयनित लोकल लीडर्स कैंप का आयोजन किया जाएगा।
- ऑल उत्तर प्रदेश मेंबर्स कैंप का आयोजन किया जाएगा।
- मरकज़ी स्तर पर SMC का आयोजन किया जाएगा।
- पॉलिसी तफ़हीम कैंप का आयोजन किया जाएगा।
- National Review Meets का आयोजन किया जाएगा
- ऑल इंडिया ZAC मीट का आयोजन किया जाएगा।